Knowledgeable Research (An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal) **ISSN 2583-6633**
Available Online: http://knowledgeableresearch.com Vol.03, No.6, January, 2025

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अथर्ववेद संहिता में जल संरक्षण की चेतना

डॉ० दौलतराम
सहायक आचार्य,श्री शक्ति संस्कृत महाविद्यालय
श्री नयना देवी जी जिला - विलासपुर.

****

शोधसार

अथर्ववेद संहिता, जो प्राचीन भारतीय ज्ञान और संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जल संरक्षण के संदर्भ में गहरी चेतना और दृष्टिकोण प्रदान करती है। जल को जीवन का आधार मानते हुए, अथर्ववेद में इसे अत्यधिक महत्वपूर्ण और पवित्र तत्व के रूप में देखा गया है। इसमें जल के महत्व पर बल दिया गया है और इसका संरक्षण समाज की जिम्मेदारी बताई गई है। अथर्ववेद में जल के विविध रूपों की पूजा की गई है, जैसे नदियों, झीलों और तालाबों के जल को जीवनदायिनी माना गया है। वेद में जल को "आयु", "स्वास्थ्य" और "समृद्धि" से जोड़कर देखा गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि जल के संरक्षण के बिना समाज और पर्यावरण का संतुलन असंभव है। उदाहरणस्वरूप, अथर्ववेद में जल के स्रोतों की रक्षा और जल का विवेकपूर्ण उपयोग करने की बात की गई है, ताकि जल का अपव्यय न हो और यह सतत रूप से उपलब्ध रहे।

वर्तमान समय में जल संकट एक गंभीर समस्या बन चुका है, और अथर्ववेद की यह चेतना जल के महत्व को समझने के साथ-साथ उसके संरक्षण की आवश्यकता को भी रेखांकित करती है। इस दृष्टिकोण से यह वेद न केवल धार्मिक या सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि आधुनिक पर्यावरणीय संकट के समाधान के लिए एक गहरी संदेश प्रदान करता है। जल संचयन, जल स्रोतों की रक्षा और पानी के विवेकपूर्ण उपयोग की आवश्यकता को आज की पीढ़ी को समझाना अथर्ववेद की चेतना का मुख्य उद्देश्य हो सकता है।

इस प्रकार, अथर्ववेद में जल संरक्षण की चेतना न केवल प्राचीन समाज की पारंपरिक मान्यताओं को दर्शाती है, बल्कि वर्तमान समय में भी यह अत्यंत प्रासंगिक और उपयोगी सिद्ध होती है।

वेद ज्ञाता से उनको अविस्मरणीय मानते हैं इसी सन्दर्भ में कुछ आधारों पर। जैसे अन्य वेदांग विद्या की अन्य शाखाएँ अपनी आत्म गर्जिना दिशाओं में हैं लेकिन अथर्ववेद तो मानो अपने अंक में पूरी जीवनमयता समेटे हुए है। सृष्टि के गूढ़ रहस्यों, दिव्य प्रार्थनाओं, यज्ञीय प्रयोगों, रोगोपचार, विवाह, प्रजनन, परिवार, समाज-व्यवस्था एवं आत्मरक्षा आदि जीवन के सभी पक्षों का इसमें समावेश है। वेद की अन्य धाराओं में 'गूढ़ ज्ञान के साथ शुद्ध विज्ञान है किन्तु अथर्ववेद में विज्ञान की गूढ़ धाराओं के साथ व्यावहारिक विज्ञान भी है। जीवन को सुखमय तथा दुःखविरहित बनाने के उद्देश्य से ऋषियों ने जिन यज्ञीय अनुष्ठानों का विधान बनाया है, उनके पूर्ण निष्पादन के निमित्त जिन चार ऋत्विजों की आवश्यकता बताई है, उनमें से अन्यतम प्रमुख ऋत्विज ब्रह्मा का प्रत्यक्ष सम्बन्ध इसी वेद से है। ''ब्रह्मा'' का स्थान यज्ञ संसद के ऋत्विजों में प्रधान है। 'ब्रह्मा' का दायित्व यज्ञीय नाना विधियों का निरीक्षण तथा त्रुटियों का परिमार्जन करना है। इसके लिए उसको सर्ववेदविद् होना अनिवार्य होता है तथा उसे मनोबल - सम्पन्न भी होना चाहिए। अथर्ववेद में शान्ति-पुष्टि तथा आभिचारिक दोनों तरह के अनुष्ठान प्रयोग वर्णित हैं। राजा के लिए शान्तिक पौष्टिक कर्म तथा तुला पुरुषादि महादान की विशेष आवश्यकता पड़ती है। जो अथर्ववेद का मुख्य प्रतिपाद्य है। मत्स्य पुराण का कहना

Knowledgeable Research (An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal) **ISSN 2583-6633**
Available Online: http://knowledgeableresearch.com Vol.03, No.6, January, 2025

है कि पुरोहित को अथर्वमंत्र तथा ब्राह्मण में पारंगत होना चाहिए। अथर्वपरिशिष्ट में तो यहां तक लिखा है कि-अथर्ववेद का ज्ञाता शान्तिकर्म का पारगामी 'पुरोहित' जिस राष्ट्र में रहता है, वह राष्ट्र उपद्रवों से हीन होकर वृद्धि को प्राप्त करता है। इसलिए राजा को चाहिए कि वह अथर्ववेदविद् तथा जितेन्द्रिय पुरोहित का दान-सम्मान, सत्कारपूर्वक नित्यप्रति पूजन-अर्चन करे। अथर्ववेद की इसी महत्ता को ध्यान में रखकर सम्भवतः कुछ आचार्यों ने इसे प्रथम वेद के रूप में स्वीकारा है।

बीजशब्द :- *अथर्ववेद संहिता, जल संरक्षण, इन्द्रियां, हिमाच्छादित पर्वतों, पर्यावरणीय दृष्टि।*

****

अथर्ववेद में आपः 'जल' को विशेष महत्व मिला है। इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि जहां ऋग्वेद का प्रारम्भ अग्नि की स्तुति से हुआ है, वहीं अथर्ववेद के प्रथम काण्ड के ४-५-६ सूक्तों में आपः 'जल' की स्तुति है। अथर्ववेद के प्रथम काण्ड के छठे सूक्त के प्रथम मंत्र में आपः को देवी बताते हुए उनकी शक्तियों और उपयोग पर भी प्रकाश डाला गया है। इन्हें यज्ञ, पान और रोगों के शमन तथा भय के निवारण हेतु कल्याणकारी विवेचित किया गया है-

शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शं योरभि स्रवन्तु नः ॥[i]

जल जीवन का अभिन्न अंग है। यह केवल पीने के लिए ही नहीं, बल्कि कृषि, उद्योग और पारिस्थितिकी के लिए भी आवश्यक है। भक्ति में जल को "मधुर" कहा गया है, जो इसकी शुद्धता और जीवनदायिता को प्रतीकित करता है।

पर्यावरण का संतुलन: जब हम देवी से शांति की कामना करते हैं, तो यह पर्यावरण के संतुलन की महत्वपूर्णता को भी रेखांकित करता है। एक स्वस्थ पर्यावरण हमें शांति और समृद्धि प्रदान करता है। मानव स्वास्थ्य: "शं योरभि स्रवन्तु नः" का अर्थ है शुभता का प्रवाह। यह मानव स्वास्थ्य तथा भलाई के लिए आवश्यक तत्वों - जैसे कि पोषणयुक्त आहार, स्वच्छ जल और निरोग वातावरण की महत्ता को भी दर्शाता है।

इस प्रकार, यह श्लोक केवल एक आध्यात्मिक प्रार्थना नहीं है, बल्कि हमारे पर्यावरण और स्वास्थ्य के महत्व को भी उजागर करता है।

अम्बयो यन्त्यध्वभिर्जामयो अध्वरीयताम ।
पृञ्चतीमधुना पयः ॥[ii]

"पृञ्चतीमधुना पयः" का अर्थ है मीठा और पौष्टिक जल। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें, तो शुद्ध और सुरक्षित जल जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह सिर्फ प्यास को बुझाने का कार्य नहीं करता, बल्कि शरीर के समुचित और प्रभावी कार्य हेतु भी अनिवार्य होता है।

पर्यावरणीय संदर्भ "यन्त्यध्वभिर्जामयो" के अनुसार, देवी हमें सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती हैं। यह वाक्य पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास के महत्व को स्पष्ट करता है, जो हमारे जीवन की दिशा को निर्धारित करने में सहायता करता है।

स्वास्थ्य और पोषण जल केवल प्यास को ही नहीं बुझाता, बल्कि यह स्वास्थ्य और पोषण का भी महत्वपूर्ण साधन है। स्वस्थ जल स्रोत, कृषि उत्पादकता और खाद्य सुरक्षा आपस में गहराई से जुड़ी हुई हैं। मधुरता और गुणवत्ता "मधु" जल की गुणवत्ता को दर्शाता है। वैज्ञानिक अभिप्राय के अनुसार, जल की गुणवत्ता का हमारे

स्वास्थ्य पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। साफ और शुद्ध जल न केवल बीमारियों से बचाव करता है, बल्कि समग्र स्वास्थ्य को भी बनाए रखने में सहायक होता है।

अमूर्या उप सूर्येयाभिर्वा सूर्यः सह।

तानो हिन्वन्त्यध्वरम् ॥[iii]

सूर्य के सम्पर्क में आकर पवित्र हुआ वाष्पीकृत जल, उसकी शक्ति के साथ पर्जन्य वर्षा के रूप में हमारे सत्कर्मों को बढ़ाए यज्ञ को सफल बनाए।

अपो देवीरूप ह्वये यत्र गावः पिबन्ति नः।
सिन्धुभ्यः कत्वं हविः ॥[iv]

हम उस दिव्य 'आप' प्रवाह की अभ्यर्थना करते हैं जो सिन्धु अन्तरिक्ष के लिए हवि प्रदान करते हैं तथा जहाँ हमारी गौएं 'इन्द्रियां और वाणियां' तृप्त होती हैं।

यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यञ्जनानाम्।

या अग्निं गमं दधिरे सुवर्णास्ता न आपः शं स्योना भवन्तु॥[v]

जिस जल में रह कर राजा वरुण सत्य एवं असत्य का निरीक्षण करते हैं, जो सुन्दर वर्ण वाला जल अग्नि को गर्भ में धारण करता है, वह हमारे लिए शान्तिप्रद हो ॥

शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः शिवयाः
तन्वोप स्पृशत त्वचां मे।
धृतश्रुतः शुचयो याः पावकास्ता न
आपः शं स्योना भवन्तु॥ [vi]

हे जल अधिष्ठाता देव ! आप अपने कल्याणकारी नेत्रों से हमें देखें तथा अपने हितकारी शरीर द्वारा हमारी त्वचा ला स्पर्श करें । तेजस्विता प्रदान करने वाला शुद्ध तथा पवित्र जल हमें सुख तथा शांति प्रदान करें।

देवस्य सवितुः सवे कर्म कृण्वन्तु मानुषाः।
शं नो भवन्त्वप औषधीः शिवाः।[vii]

सबके प्रेरक उत्पादक सविता देवता की प्रेरणा से सब मनुष्य अपने-अपने नियत लौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकार के काम करें। कल्याणकारी औषधियों की वृद्धि एवं हमारे लिए जल कल्याणकारी एवं पा क्षयकारी सिद्ध हो।

हिमवतः प्रस्रवन्ति सिन्धौ समह संगमः।
आपो ह महां तद् देवीर्ददन् हृद्द्योतभेषजम्॥[viii]

हिमाच्छादित पर्वतों की जल धाराएं बहती हुई समुद्र में मिलती हैं, ऐसी पापनाशक जल धाराएं हमारे हृदय के दाह को शान्ति देने वाली औषधियाँ - प्रदान करें।

सिन्धुपत्नीः सिन्धुराज्ञीः सर्वा या नद्य१स्थन।
दत्त नस्तस्य भेषजं तेना वो भुनजामहै।[ix]

आप समुद्र की पत्नियाँ हैं, समुद्र आपका सम्राट् है। हे निरन्तर बहती हुई जल धाराओ ! आप हमें पीड़ा से मुक्त होने वाले रोग का निदान दें, , जिससे हम आपके स्वजन निरोग होकर अन्नादि बल देने वाली वस्तुओं का उपभोग कर सकें।

वर्तमान समय में पर्यावरणीय दृष्टि और जल संरक्षण व्यवस्थाएं

वर्तमान केन्द्रीय सरकार देश में बढ़ती जल समस्या के प्रति संवेदनशील दिखाई देती है। राज्य सरकारें भी अपने पानी के हक की लड़ाई लड़ रही है। समाज और सरकारें अपने-अपने पानी के हक के लिए आगे आए हैं। पानी के संरक्षण का भाव समाज, सरकार और सरकार के कार्यों में झलकता है। दूसरी ओर हमारे पानी की मालिक दूसरे देशों की बड़ी कम्पनियां बन रही हैं। वह अपना मुनाफा धरती के नीचे और धरती के ऊपर बहने वाले पानी में देखती हैं। वर्षा के पानी पर राज्य सरकारें अपना हक मानती हैं और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को सहेज कर रखने का भरसक प्रयास कर रही हैं।

हमारे देश में प्राकृतिक संपदा के संरक्षण के लिए कानून तो बने हुए हैं। लेकिन इतने बड़े देश में उनकी पालना करने-कराने वालों का अकाल है। जनता को कुशल और संवेदनशील नेतृत्व चाहिए जो प्राकृतिक संपदा के संरक्षण में सहयोगी बने। पानी भी प्राकृतिक संपदा का एक अंग है। इसे बचाने के लिए और उपभोग के लिए जनता को जागरूक बनाए रखना कुशल नेतृत्व का अहम कार्य है। उसके लिए व्यवस्था ऐसी सुनिश्चित की जाए कि जनता जनार्दन सहज रूप से स्वीकार करते हुए अपनाती रहे। उसकी उपभोग प्रवृत्ति में लालच और दोहन का भाव न बढ़े।

बल्कि संरक्षण और संवर्द्धन का भाव हमेशा पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ता रहे। ऐसी व्यवस्था से ही हमारी समस्याओं का समाधान हो सकता है।

देश के प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के कारण देश में बढ़ती जन समस्याओं को देखते हुए हमारी न्याय व्यवस्था ने समय-समय पर अहम भूमिका निभाई है। चाहे वह जंगल संरक्षण के सवाल हों या पर्यावरण के सवाल हों, उसने अपना दृष्टिकोण देश की जनता के सामने रखा है। उसकी पालना के लिए भारत सरकार और राज्य सरकारों को भी पाबन्द किया है। जबकि सरकार ही कानून बनाती है और सरकार ही उन कानूनों का उल्लंघन करती है। जनता केवल देखती है और अपने नेतृत्व का अनुसरण करती है। इससे सामाजिक जीवनशैली और व्यवस्थाएं हमेशा बिगड़ती हैं। ऐसी स्थिति में न्याय व्यवस्था का कार्य और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। वह सचेत रह कर अपने निर्णय देती है और उसकी पालना के लिए सरकार व जनता को पाबन्द करते हुए दण्ड व्यवस्था को भी सख्ती से लागू करती है।

देश में घटते प्राकृतिक जल स्रोतों के कारण बढ़ती जन समस्याओं को देखते हुए देश में न्याय व्यवस्था की सर्वोच्च संस्था उच्चतम न्यायालय ने प्रकृति की रक्षा के लिए एक अहम फैसला किया। माननीय उच्चतम न्यायालय की व्यवस्था में हमारी प्राचीन जल संस्कृति की रक्षा निहित है। जिससे देश में बढ़ती जल समस्या के समाधान हेतु सरकार और समाज को आगे आकर कार्य करना होगा। तभी देश के लिए बढ़ती समस्या का समाधान समय रहते हो सकता है।[x]

उपसंहार

जल संरक्षण एक वैश्विक आवश्यकता बन चुका है, और अथर्ववेद संहिता में जल का जो महत्व दर्शाया गया है, वह आज के संदर्भ में अत्यधिक प्रासंगिक है। प्राचीन भारतीय ज्ञान और आधुनिक तकनीकों का संयोजन हमें जल के उचित प्रबंधन में मदद कर सकता है। समुदाय की भागीदारी, स्थानीय संसाधनों का संरक्षण, और जल की पवित्रता को बनाए रखना आवश्यक हैं। इस प्रकार, जल संकट के समाधान के लिए हमें एक समर्पित दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। जल का संरक्षण न केवल हमारे जीवन के लिए, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है।

> अंततः जल का संरक्षण न केवल हमारे लिए, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी अत्यंत आवश्यक है। हमें इसे बचाने के लिए सामूहिक रूप से प्रयास करने की आवश्यकता है।

Corresponding Author: Dr.Daulatram

E-mail: daultsharma01@gmail.com

Received: 09 January, 2025; Accepted: 19 January, 2025. Available online: 30 January, 2025
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[i] अथर्ववेद काण्ड-१, सूक्त-६,

[ii] अथर्ववेद संहिता, प्रथम काण्ड, सूक्त ४, मंत्र -१,

[iii] अथर्ववेद संहिता, प्रथम काण्ड, सूक्त ४, मंत्र -२,

[iv] अथर्ववेद संहिता, प्रथम काण्ड, सूक्त ४, मंत्र -३,

[v] अथर्ववेद १.३३.२

[vi] अथर्ववेद १.३३.४

[vii] अथर्ववेद ६.२३.३

[viii] अथर्ववेद,२४ अपांभैषज्य सूक्त, मन्त्र - १

[ix] अथर्ववेद , २४ अपांभैषज्य सूक्त, मन्त्र – ३

[x] विषय मा. उच्चतम न्यायालय द्वारा सिविल अपील संख्या - ४७८७/२००१, हिंचलाला तिवारी बनाम कमलादेवी आदि में पारित आदेश दिनांक २५.७.२००१ का अनुपालन किए जाने सम्बन्धी।